Jumua Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 311
Weekly Booklet : 311

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की
एक क़िस्त बनाम

जुमुआ़ के फ़ज़ाइल

सफ़हात 29

- पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा 07
- जुमुआ़ ता जुमुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी 11
- जुमुआ़ को मां बाप की क़ब्र पर हाज़िरी का सवाब 18
- ख़ुत्बे के 7 मदनी फूल 25

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **जुमुआ के फ़ज़ाइल**

सिने त़बाअ़त : ज़िल ह़ज **1444** हि., जूलाई **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

जुमुआ़ के फ़ज़ाइल

येह रिसाला (**जुमुआ़ के फ़ज़ाइल**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद –1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ''फ़ैज़ाने नमाज़'' सफ़ह़ा 115 ता 136 से लिया गया है।

जुमुआ़ के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 27 सफ़ह़ात का रिसाला ''**जुमुआ़ के फ़ज़ाइल**'' पढ़ या सुन ले उसे जुमुआ़ के मुबारक दिन के सदक़े अपनी रह़मतों से मालामाल फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जुमुआ़ को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(جمع الجوامع، 7/199، حدیث:22353)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें **जुमुअ़तुल मुबारक** की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। अफ़्सोस ! हम ना क़द्रे **जुमुआ़** शरीफ़ को भी आ़म दिनों की त़रह़ ग़फ़्लत में गुज़ार देते हैं ह़ालां कि **जुमुआ़** यौमे ईद है, **जुमुआ़** सय्यिदुल अय्याम या'नी सब दिनों का सरदार है, **जुमुआ़** के रोज़ जहन्नम की आग नहीं सुलगाई जाती, **जुमुआ़** की रात दोज़ख़ के दरवाज़े नहीं खुलते, **जुमुआ़** को बरोज़े क़ियामत दूल्हन की त़रह़ उठाया

जाएगा, **जुमुआ़** के रोज़ मरने वाला ख़ुश नसीब मुसल्मान शहीद का रुत्बा पाता और अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ हो जाता है। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान के मुत़ाबिक़, **जुमुआ़** को ह़ज हो तो उस का सवाब सत्तर (70) ह़ज के बराबर है, **जुमुआ़ की एक नेकी का सवाब सत्तर (70) गुना है।** (चूंकि जुमुआ़ का शरफ़ बहुत ज़ियादा है लिहाज़ा) **जुमुआ़ के रोज़ गुनाह का अ़ज़ाब भी सत्तर (70) गुना है।**

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/323, 325, 336 मुलख़्ख़सन)

जुमुअ़तुल मुबारक के फ़ज़ाइल के तो क्या कहने ! **अल्लाह** करीम ने जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक पूरी सूरत **"सूरतुल जुमुअ़ह"** नाज़िल फ़रमाई है जो कि क़ुरआने करीम के 28वें पारे में जगमगा रही है। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त सूरतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۹

(پ28، الجمعۃ:9)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ़ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो।

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहला जुमुआ़ कब अदा फ़रमाया ?

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ह़ुज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام जब हिजरत कर के **मदीनए त़य्यिबा** तशरीफ़ लाए तो 12 रबीउ़ल अव्वल (622 ई.) रोज़े दो शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) को चाश्त के वक़्त मक़ामे **क़ुबा** में

इक़ामत फ़रमाई (या'नी ठहरे)। दो शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) सह शम्बा (या'नी मंगल) चहार शम्बा (या'नी बुध) पन्ज शम्बा (या'नी जुमे'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी। रोज़े **जुमुआ़ मदीनए त़य्यिबा** का अ़ज़्म (या'नी सफ़र) फ़रमाया। बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में **जुमुआ़** का वक़्त आया उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां **जुमुआ़** अदा फ़रमाया और ख़ुत़्बा फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 884)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه ! आज भी उस जगह पर शानदार **मस्जिदे जुमुआ़** क़ाइम है और ज़ाइरीन ह़ुसूले बरकत के लिये उस की ज़ियारत करते और वहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

जुमुआ़ के मा'ना

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام की मिट्टी इसी दिन जम्अ़ हुई नीज़ इस दिन में लोग जम्अ़ हो कर नमाज़े जुमुआ़ अदा करते हैं, इन वुजूह (Reasons) से इसे जुमुआ़ कहते हैं। इस्लाम से पहले अहले अ़रब इसे अ़रूबा कहते थे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/317 मुलख़्ख़सन)

सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन 500 जुमुए़ पढ़े

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं : **नबिय्ये** करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन पांच सो (500) जुमुए़ पढ़े हैं, इस लिये कि जुमुआ़ बा'दे हिजरत शुरूअ़ हुवा जिस के बा'द दस साल आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी शरीफ़ रही इस अ़र्से में जुमुए़ इतने ही होते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/346, لمعات التنقیح، 4/190، تحت الحدیث:1415)

तीन जुमुए सुस्ती से छोड़े उस के दिल पर मोहर

अल्लाह के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो शख़्स तीन जुमुआ (की नमाज़) सुस्ती के सबब छोड़े **अल्लाह** पाक उस के दिल पर मोहर कर देगा।" (ترمذی،2/38،حدیث:500)

जुमुआ फ़र्ज़े ऐन (या'नी जिस का अदा करना आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द पर ज़रूरी) है और इस की फ़र्ज़िय्यत ज़ोहर से ज़ियादा मुअक्कद (या'नी ताकीदी) है और इस का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) काफ़िर है। (درمختار،3/5, बहारे शरीअ़त, 1/762, हिस्सा : 4)

इमामत का मुसल्ला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़े जुमुआ के लिये काफ़ी पहले पहुंच जाने, पहली सफ़ पाने और तक्बीरे ऊला का सवाब कमाने का ज़ेह्न बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के दीनी माह़ोल को अपनाए रहिये, आइये ! "मदनी बहार" सुनिये : एक नौ जवान इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने से पहले ड्रामे और फ़ोह़्श फ़िल्में देखने और गाने बाजे सुनने के आ़दी थे, इन की कमर में दर्द रहने लगा तो इस का गुनाहों भरा इ़लाज इन्हों ने शराब नोशी में ढूंडा। नमाज़ें पढ़ना तो एक त़रफ़ इन्हें नमाज़ पढ़ने का दुरुस्त त़रीक़ा तक मा'लूम नहीं था, लेकिन इन का ज़मीर इन्हें मलामत करता रहता कि मुसल्मान हो कर मुझे नमाज़ पढ़ना नहीं आती। ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ इन की वर्कशोप में काम करने के लिये मुलाज़िम हुए तो इन्हें मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का इ़मामा, दाढ़ी और सुन्नत पर अ़मल करना बहुत पसन्द आया कि येह नौ जवान आ़म लोगों से कितना मुख़्तलिफ़ है ! इस्लामी भाई की

सोह़बत रंग लाने लगी और वोह इन को भी तरग़ीब दे कर नमाज़ के लिये मस्जिद में ले जाते। रमज़ान का महीना आया तो मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की तरग़ीब पर इन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ किया, गुनाहों से ताइब हुए और ईद के मौक़अ़ पर तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र भी किया। ए'तिकाफ़ में वोह दा'वते इस्लामी के रंग में रंग गए फिर 41 दिन का मदनी क़ाफ़िला कोर्स भी किया, बा'द में ज़ेह्न बना तो 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र भी किया, बिल आख़िर इमामत कोर्स करने के बा'द एक मस्जिद में इमामत की। इन के वसीले से दा'वते इस्लामी की बरकतें अहले ख़ाना को भी मिलीं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه घर में दीनी माह़ोल बन गया।

اِنْ شَآءَاللّٰه भाई सुधर जाओगे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इ़स्यां से छुटकारा तुम पाओगे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जुमुआ़ के इमामे की फ़ज़ीलत

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है : "बेशक **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते **जुमुआ़ के दिन इमामा** बांधने वालों पर **दुरूद** भेजते हैं।" (مجمع الزوائد، 2/394، حدیث:3075)

अल्लाह पाक और फ़िरिश्तों के दुरूद भेजने के मा'ना

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक में **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्तों का जुमुआ़ के दिन इमामा शरीफ़ बांधने वालों पर दुरूद भेजने का ज़िक्र है याद रहे इस से मा'रूफ़ दुरूद मुराद नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक का अपने बन्दों पर दुरूद भेजने का मत़लब है रह़मत नाज़िल

फ़रमाना और फ़िरिश्तों के दुरूद भेजने का मत़लब है इस्तिग़फ़ार करना (या'नी मग़्फ़िरत त़लब करना)। (فتح الباری، 12/131)

एक जुमुआ़ 70 जुमुओं के बराबर

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इमामे के साथ एक जुमुआ़ बे इमामा के सत्तर जुमुओं के बराबर है। (جامع صغیر، ص314، حدیث:5101 مختصراً)

शिफ़ा दाख़िल होती है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन अपने नाख़ुन काटता है **अल्लाह** पाक उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा दाख़िल कर देता है।" (قوت القلوب، 1/119)

दस दिन तक बलाओं से ह़िफ़ाज़त

ह़ज़रते मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़दीसे पाक में है : जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए (या'नी कटवाए) **अल्लाह** पाक उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से महफ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाए (या'नी कटवाए) तो **रह़मत आएगी गुनाह जाएंगे।** (बहारे शरीअ़त, 3/226, ह़िस्सा : 16, 669تا668/9، درمختار وردالمحتار)

रिज़्क़ में तंगी का एक सबब

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाना मुस्तह़ब है, हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न करे कि नाख़ुन बड़ा होना अच्छा नहीं क्यूं कि नाख़ुनों का बड़ा होना तंगिये रिज़्क़ का सबब है। (बहारे शरीअ़त, 3/225, ह़िस्सा : 16)

फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है : "जब जुमुआ़ का दिन आता है तो मस्जिद के दरवाज़े पर फ़िरिश्ते आने वाले को लिखते हैं, जो पहले आए उस को पहले लिखते हैं, जल्दी आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **अल्लाह** पाक की राह में एक ऊंट सदक़ा (या'नी ख़ैरात) करता है, और इस के बा'द आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो **एक गाय** सदक़ा करता है, इस के बा'द वाला उस शख़्स की मिस्ल है जो **मेंढा** सदक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो **मुर्ग़ी** सदक़ा करे, फिर उस की मिस्ल है जो **अन्डा** सदक़ा करे और जब इमाम (ख़ुत्बे के लिये) बैठ जाता है तो वोह (या'नी फ़िरिश्ते) आ'माल नामों को लपेट लेते हैं और आ कर ख़ुत्बा सुनते हैं।" (بخاری، 1/319، حدیث:929)

शर्ह़े ह़दीस

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि मलाएका **जुमुआ़** की तुलूए़ फ़ज्र से खड़े होते हैं, बा'ज़ के नज़्दीक आफ़्ताब चमकने (या'नी सूरज निकलने) से, मगर ह़क़ येह है कि सूरज ढलने (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह्र) से शुरूअ़ होते हैं क्यूं कि उसी वक़्त से वक़्ते जुमुआ़ शुरूअ़ होता है, मा'लूम हुवा कि वोह फ़िरिश्ते सब आने वालों के नाम जानते हैं, ख़याल रहे कि अगर अव्वलन सो (100) आदमी एक साथ मस्जिद में आएं तो वोह सब अव्वल (या'नी पहले आने वाले) हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/335)

पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पहली सदी में सह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्ते लोगों

से भरे हुए देखे जाते थे, वोह चराग़ लिये हुए (नमाज़े जुमुआ़ के लिये) जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जाते गोया ईद का दिन हो, यहां तक कि नमाज़े जुमुआ़ के लिये जल्दी जाने का सिल्सिला ख़त्म हो गया। पस कहा गया कि इस्लाम में जो पहली बिद्अ़त ज़ाहिर हुई वोह जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना छोड़ना है। अफ़्सोस ! मुसल्मानों को किसी त़रह़ यहूदियों से ह़या नहीं आती कि वोह लोग अपनी इबादत गाहों की त़रफ़ हफ़्ते और इतवार के दिन सुब्ह़ सवेरे जाते हैं। नीज़ दुन्या की कमाई चाहने वाले ख़रीदो फ़रोख़्त और दुन्यवी नफ़्अ़ ह़ासिल करने के लिये सवेरे सवेरे बाज़ारों की त़रफ़ चल पड़ते हैं तो आख़िरत त़लब करने वाले इन से मुक़ाबला क्यूं नहीं करते ! (احیاء العلوم، 1/246)

ग़रीबों का ह़ज

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْجُمُعَۃُ حَجُّ الْمَسَاکِیْن या'नी "जुमुआ़ की नमाज़ मसाकीन का ह़ज है।" और दूसरी रिवायत में है कि اَلْجُمُعَۃُ حَجُّ الْفُقَرَاء या'नी "**जुमुआ़** की नमाज़ **ग़रीबों का ह़ज** है।" (جمع الجوامع، 4/84، حدیث: 11108 تا 11109)

जुमुआ़ के लिये जल्दी निकलना ह़ज है

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बिला शुबा तुम्हारे लिये हर जुमुआ़ के दिन में **एक ह़ज** और **एक उ़म्रह** मौजूद है, लिहाज़ा **जुमुआ़** की नमाज़ के लिये जल्दी निकलना **ह़ज** है और जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द अ़स्र की नमाज़ के लिये इन्तिज़ार करना **उ़म्रह** है।"

(سنن الکبریٰ للبیہقی، 3/342، حدیث: 5950)

ह़ज व उ़म्रह का सवाब

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (नमाज़े जुमुआ़ के बा'द) अ़स्र की नमाज़ पढ़ने तक मस्जिद ही में रहे और अगर नमाज़े मग़रिब तक ठहरे तो **अफ़्ज़ल** है। कहा जाता है कि जिस ने जामेअ़ मस्जिद में (जुमुआ़ अदा करने के बा'द वहीं रुक कर) नमाज़े अ़स्र पढ़ी उस के लिये ह़ज का सवाब है और जिस ने (वहीं रुक कर) मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये **ह़ज** और उ़म्रे का सवाब है। (احیاء العلوم، 1/249)

जहां जुमुआ़ पढ़ा जाता है उस को "जामेअ़ मस्जिद" बोलते है।

सब दिनों का सरदार

हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जुमुआ़ का दिन तमाम दिनों का सरदार है और **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से बड़ा है और वोह **अल्लाह** पाक के नज़्दीक ईदुल अज़्ह़ा और ईदुल फ़ित्र से बड़ा है। इस में पांच ख़ुसूसिय्यतें हैं : ﴿1﴾ **अल्लाह** पाक ने इसी में आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) को पैदा किया और ﴿2﴾ इसी में ज़मीन पर उन्हें उतारा और ﴿3﴾ इसी में उन्हें वफ़ात दी और ﴿4﴾ इस में एक साअ़त (या'नी घड़ी) ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करेगा वोह उसे देगा जब तक ह़राम का सुवाल न करे और ﴿5﴾ इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी। कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता व आस्मान व ज़मीन और हवा व पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि **जुमुआ़** के दिन से डरता न हो।" (ابن ماجہ، 2/8، حدیث:1084)

जानवरों का ख़ौफ़े क़ियामत

एक और रिवायत में **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि कोई जानवर ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन सुब्ह़ के वक़्त

आफ़्ताब निकलने तक क़ियामत के डर से चीख़ता न हो, सिवाए आदमी और जिन्न के। (موطاامام مالک، 1/115، حدیث:246)

दुआ़ क़बूल होती है

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **जुमुआ़** में एक ऐसी घड़ी है कि अगर कोई मुसल्मान उसे पा कर उस वक़्त **अल्लाह** पाक से कुछ मांगे तो **अल्लाह** पाक उस को ज़रूर देगा और वोह घड़ी मुख़्तसर है। (مسلم، ص424، حدیث:852)

अ़स्र व मग़रिब के दरमियान ढूंडो

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**जुमुआ़** के दिन जिस साआ़त (या'नी घड़ी) की ख़्वाहिश की जाती है उसे अ़स्र के बा'द से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तलाश करो।" (ترمذی، 2/30، حدیث:489)

साह़िबे बहारे शरीअ़त का इर्शाद

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़बूलिय्यते दुआ़ की साआ़तों (या'नी घड़ियों, वक़्तों) के बारे में दो क़ौल क़वी (या'नी मज़बूत़) हैं : ﴿1﴾ इमाम के ख़ुत़्बे के लिये बैठने से ख़त़्मे नमाज़ तक ﴿2﴾ जुमुआ़ की पिछली (या'नी आख़िरी) साआ़त।

(बहारे शरीअ़त, 1/754 ह़िस्सा : 4)

ह़िकायत

ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا उस वक़्त ख़ुद हुजरे में बैठतीं और अपनी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا को बाहर खड़ा करतीं, जब आफ़्ताब डूबने लगता तो ख़ादिमा आप को ख़बर देतीं, उस की ख़बर पर **सय्यिदह** अपने हाथ दुआ़ के लिये उठातीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/320) **बेहतर येह है**

कि इस साअ़त में (कोई) जामेअ़ **दुआ** मांगे जैसे येह कुरआनी दुआ : ﴿رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾ (پ2، البقرة: 201) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा) (मिरआतुल मनाजीह, 2/325) दुआ की निय्यत से दुरूद शरीफ़ भी पढ़ सकते हैं कि दुरूदे पाक भी अ़ज़ीमुश्शान दुआ है।

हर जुमुआ को एक करोड़ 44 लाख जहन्नम से आज़ाद

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **जुमुआ** के दिन और रात में चौबीस (24) घन्टे हैं कोई घन्टा ऐसा नहीं जिस में **अल्लाह** पाक जहन्नम से **छे लाख** आज़ाद न करता हो, जिन पर जहन्नम **वाजिब** हो गया था। (مسند ابو یعلی، 3/235، 291، حدیث: 3421، 3471)

अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़

ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ (या'नी जुमे'रात और जुमुआ की दरमियानी शब) मरेगा अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि **उस पर शहीदों की मोहर** होगी।

(حلیۃ الاولیاء، 3/181، حدیث: 3629)

जुमुआ ता जुमुआ गुनाहों की मुआफ़ी

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है, सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स **जुमुआ** के दिन नहाए और जिस त़हारत (या'नी पाकीज़गी) की इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त) हो करे और तेल लगाए और घर में जो **ख़ुश्बू** हो मले फिर **नमाज़** को निकले और दो

शख़्सों में जुदाई न करे या'नी दो शख़्स बैठे हुए हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे और जो **नमाज़** उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत्बा पढ़े तो चुप रहे, **उस के लिये उन गुनाहों की, जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं मग़्फ़िरत हो जाएगी ।** (بخاری، 1/306، حدیث:883)

तज़्किरए ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अभी आप ने जो ह़दीसे पाक सुनी उस के रावी (या'नी बयान करने वाले) हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ज़मत वाले सह़ाबी ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मह़ब्बत का इज़्हार इस फ़रमाने आ़लीशान से करते हैं कि "जो मुझ से मह़ब्बत करता है उसे चाहिये कि वोह मेरे सह़ाबा से मह़ब्बत करे ।" (تفسیر قرطبی، 6/203) आप की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है । आप हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा हैं, आप फ़ारसियुन्नस्ल हैं, फ़ारिस के शह्र अस्फ़हान के अ़लाक़े के रहने वाले थे, तलाशे दीन में देस छोड़ कर परदेसी बने, पहले ईसाई बने उन की किताबें पढ़ीं, बहुत मुसीबतें झेलीं ह़त्ता कि उन्हें बा'ज़ अ़रबिय्यों ने ग़ुलाम बना लिया और यहूद के हाथ फ़रोख़्त कर दिया, इन के आक़ा ने इन्हें मुकातब कर दिया, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का "माले किताबत" (या'नी आज़ादी के लिये तै़ शुदा माल) अदा कर के आज़ाद कर दिया, आप दस से ज़ियादा आक़ाओं के पास पहुंचे ह़त्ता कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गए । (मिरआतुल मनाजीह़, 8/33) "**मुकातब**" उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया हुवा हो । (جوہرہ نیرہ، ص142 ملخصاً)

आज़ादी के बा'द तमाम ग़ज़वात में शिर्कत

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़ुलामी की ज़न्जीरों में जकड़े होने की वज्ह से ग़ज़्वए बद्र व उहुद में ह़िस्सा न ले सके, फिर तीन सो खजूर के दरख़्त और चालीस ऊक़िया चांदी के बदले आज़ाद हुए और एक सर फ़रोश मुजाहिद की त़रह़ बा'द में आने वाले तमाम ग़ज़वात में ह़िस्सा लिया। (تاریخ ابن عساکر، 21/388-389 ملخصًا) ग़ज़्वए ख़न्दक़ में ख़न्दक़ खोदने का मश्वरा भी आप ही का था। (طبقات ابن سعد، 2/51)

सय्यिदुना सलमान की शान

सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को वालिहाना मह़ब्बत थी, अपने वक़्त का ज़ियादा तर ह़िस्सा दरबारे रिसालत में गुज़ारते और फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा से मालामाल होते, इस के बदले में बारगाहे रिसालत से سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْت या'नी सलमान हमारे अहले बैत से हैं। (مسند بزار، 13/140، حدیث:6534) जैसी ख़ुश ख़बरी सुनने की सआ़दत पाई, एक और मक़ाम पर इस अ़ज़ीम बिशारत से सरफ़राज़ हुए कि "जन्नत सलमान फ़ारसी की मुश्ताक़ (या'नी आरज़ू मन्द) है।" (ترمذی، 5/438، حدیث:3822)

सादगी की अनोखी ह़िकायत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक अ़र्से तक मदीने शरीफ़ में क़ियाम फ़रमाया फिर अ़हदे फ़ारूक़ी में "इराक़" में रिहाइश इख़्तियार कर ली। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने आप को "मदाइन" का गवर्नर मुक़र्रर कर दिया। गवर्नर के अहम और बड़े ओ़हदे पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद आप ने बड़ी सादा ज़िन्दगी गुज़ारी, एक दिन "मदाइन" के बाज़ार

में जा रहे थे कि एक ना वाक़िफ़ शख़्स ने आप को मज़दूर समझ कर अपना सामान उठाने के लिये कहा, आप चुपचाप सामान उठा कर उस के पीछे चलने लगे। लोगों ने देखा तो कहा : ऐ सह़ाबिये रसूल ! आप ने येह बोझ क्यूं उठा रखा है ? लाइये ! हम इसे उठा लेते हैं। सामान का मालिक हक्का बक्का रह गया, फिर निहायत शर्मसार हो कर आप से मुआ़फ़ी मांगी और सामान उतरवाना चाहा लेकिन आप ने फ़रमाया : मैं ने तुम्हारा सामान उठाने की निय्यत की थी, अब इसे तुम्हारे घर तक पहुंचा कर ही दम लूंगा। (طبقات ابن سعد، 4/66)

पूरी तनख़्वाह मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा देते

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना ख़ूब पसन्द करते थे चुनान्चे बत़ौरे तनख़्वाह चार या पांच हज़ार दिरहम मिलते लेकिन पूरी तनख़्वाह मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा देते और ख़ुद खजूर के पत्तों से टोकरियां बना कर चन्द दिरहम कमाते और इसी पर अपना गुज़र बसर करते थे। (طبقات ابن سعد، 4/65)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हमें इ़ज़्ज़त इनायत हो कभी भी ख़्वार मत करना

ख़ुदा ! सलमान का सदक़ा, हमारी मग़्फ़िरत करना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

200 साल की इबादत का सवाब

अपनी उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो जुमुआ़ के दिन **नहाए** उस के गुनाह और ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जब चलना शुरूअ़ किया तो हर क़दम पर **बीस नेकियां** लिखी

जाती हैं। (معجم کبیر، 18/139، حدیث:296) और दूसरी रिवायत में है : हर क़दम पर बीस साल का अ़मल लिखा जाता है और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उसे **दो सो बरस** के अ़मल का अज्र मिलता है। (معجم اوسط، 2/314، حدیث:3397)

मर्हूम वालिदैन को हर जुमुआ़ आ'माल पेश होते हैं

ग़मज़दों के ग़म दूर करने वाले ख़ुश अख़्लाक़ आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पीर और जुमे'रात को **अल्लाह** पाक के हुज़ूर **आ'माल** पेश होते हैं और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और मां बाप के सामने हर **जुमुआ़** को। वोह नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ाई व ताबिश (या'नी चमक दमक) बढ़ जाती है, तो **अल्लाह** से डरो और अपने वफ़ात पाने वालों को **अपने गुनाहों** से रन्ज न पहुंचाओ। (نوادر الاصول، 2/260)

जुमुआ़ के पांच ख़ुसूसी आ'माल

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है, सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : पांच चीज़ें जो एक दिन में करेगा **अल्लाह** पाक उस को जन्नती लिख देगा ﴿1﴾ जो मरीज़ की इ़यादत को जाए ﴿2﴾ नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िर हो ﴿3﴾ रोज़ा रखे ﴿4﴾ (नमाज़े) जुमुआ़ को जाए और ﴿5﴾ ग़ुलाम आज़ाद करे। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبّان، 4/191، حدیث:2760)

जन्नत वाजिब हो गई

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने जुमुआ़ की नमाज़ पढ़ी, उस दिन का रोज़ा रखा, किसी मरीज़ की इ़यादत की, किसी जनाज़े में ह़ाज़िर हुवा और किसी निकाह़ में शिर्कत की तो जन्नत उस के लिये वाजिब हो गई।

(معجم کبیر، 8/97، حدیث:7487)

सिर्फ़ जुमुआ़ का रोज़ा न रखिये

ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा जुमुआ़ या सिर्फ़ हफ़्ते (या'नी Saturday) का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को जुमुआ़ या हफ़्ता आ गया तो कराहत नहीं। मसलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 रजबुल मुरज्जब वग़ैरा। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "**जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन **रोज़ा** मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो।" (الترغیب والترہیب، 2/81، حدیث:11)

दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर

सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** रोज़ए **जुमुआ़** या'नी जब इस के साथ पन्ज शम्बा (या'नी जुमे'रात का) या शम्बा (या'नी हफ़्ते का रोज़ा) भी शामिल हो, मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।** (फ़तावा रज़विय्या, 10/653)

जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है

जुमुआ़ का रोज़ा हर सूरत में मक्रूह नहीं, मक्रूह सिर्फ़ इसी सूरत में है जब कि कोई ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ का रोज़ा रखे। चुनान्चे **जुमुआ़ का रोज़ा कब मक्रूह है ?** इस सिल्सिले में **फ़तावा रज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़ह़ा 559 से **सुवाल जवाब** मुलाह़ज़ा हों,

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि जुमुआ़ का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा **:** जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन (या'नी मुसल्मानों की ईद) है रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दोपहर के रोज़ा तुड़वा दिया... !

जवाब : जुमुआ़ का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से कि आज जुमुआ़ है इस का

रोज़ा बित्तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत के साथ) चाहिये मक्रूह है मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत) न थी तो अस्लन (या'नी बिल्कुल) कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ग़लत हुवा, और रोज़ा तुड़वा देना शर्अ़ पर सख़्त जुर्अत, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना, और वोह भी बा'द दोपहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन (बिल्कुल) नहीं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

मदनी हुल्या देख कर मुतअस्सिर हो गए

जुमुआ़ के दिन मुख़्तलिफ़ नेकियों का सवाब कमाने की हिर्स बढ़ाने, दुरूदो सलाम की कसरत फ़रमाने का जज़्बा पाने के लिये "दा'वते इस्लामी" के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। आप की तरग़ीब के लिये एक "मदनी बहार" पेश की जाती है : चुनान्चे एक इस्लामी भाई दीनी माहोल में आने से पहले आवारगी और गर्ल फ़्रेन्ड्ज़ के चक्कर में मुब्तला थे। दिन देखते न रात ! साउन्ड सिस्टम पर ऊंची आवाज़ से ख़ूब गाने सुनते। घर वाले समझाते लेकिन येह एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल दिया करते। एक दिन किसी जगह पर अपने दोस्तों के साथ बैठे हुए थे कि ना'त शरीफ़ पढ़ने की आवाज़ सुनी जो इन को बहुत पसन्द आई, येह आवाज़ के रुख़ पर चलते चलते महफ़िले ना'त में पहुंच गए जहां सफ़ेद लिबास, सर पर इमामा शरीफ़ ऊपर सफ़ेद चादर ओढ़े, ज़ुल्फ़ों और दाढ़ी

वाले ना'त ख़्वां ना'त शरीफ़ पढ़ रहे थे। इन के दिल पर चोट लगी कि मेरी भी क्या ज़िन्दगी है! ज़िन्दगी का लुत्फ़ तो येह लोग उठा रहे हैं जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ में उन की सुन्नतों पर अ़मल करते हैं। उस महफ़िले ना'त में बैठे बैठे इन्हों ने नमाज़ पढ़ने की पक्की निय्यत की और पढ़नी भी शुरूअ़ कर दी। फिर इन के किसी जानने वाले ने दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ में शामिल होने की तरग़ीब दिलाई, येह तो पहले ही से दा'वते इस्लामी वालों के शैदाई थे, फ़ौरन राज़ी हो गए। ए'तिकाफ़ में एक कलाम पढ़ा गया "काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता" जिसे सुन कर इन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, फिर अ़स्र के बा'द फ़िक्रे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा तो इन के दिल में हलचल मच गई, इन्हों ने पिछले गुनाहों से पक्की तौबा कर ली। इस के बा'द चेहरे पर दाढ़ी, सर पर ज़ुल्फ़ें और इ़मामे शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ए'तिकाफ़ के बा'द अपने अ़लाक़े में "सदाए मदीना" लगाते हुए मुसल्मानों को फ़ज्र की नमाज़ के लिये जगाने लगे। दा'वते इस्लामी के दीनी काम करते हुए एक ह़ल्क़े की ज़िम्मेदारी तक भी पहुंचे।

गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बे जा बक बक की ख़स्लत भी टल जाएगी, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जुमुआ़ को मां बाप की क़ब्र पर ह़ाज़िरी का सवाब

हम गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : जो अपने मां बाप दोनों या एक

की क़ब्र पर **हर जुमुआ़** के दिन ज़ियारत को हाज़िर हो, **अल्लाह** पाक उस के **गुनाह** बख़्श दे और मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाएगा। (معجم اوسط، 4/321، حدیث:6114)

क़ब्रे वालिदैन पर "यासीन" पढ़ने की फ़ज़ीलत

अपने रब से हम गुनहगारों को बख़्शवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रोज़े **जुमुआ़** अपने वालिदैन या एक की क़ब्र की ज़ियारत करे और उस के पास **यासीन** पढ़े, बख़्श दिया जाएगा। (الکامل فی ضعفاء الرجال، 6/260)

तीन हज़ार मग़्फ़िरतें

रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो हर जुमुआ़ वालिदैन या एक की ज़ियारते क़ब्र कर के वहां यासीन पढ़े, यासीन (शरीफ़) में जितने ह़र्फ़ हैं उन सब की गिनती के बराबर **अल्लाह** पाक उस के लिये मग़्फ़िरत फ़रमाएगा। (اتحاف السادۃ، 14/272)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर **जुमुआ़** शरीफ़ को फ़ौत शुदा वालिदैन या इन में से एक की क़ब्र पर ह़ाज़िर हो कर यासीन शरीफ़ पढ़ने वाले का तो बेड़ा ही पार है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه यासीन शरीफ़ में 5 रुकूअ़ 83 आयात 729 कलिमात और **तक़रीबन 3000 ह़ुरूफ़** हैं اِنْ شَآءَاللّٰه **तक़रीबन तीन हज़ार मग़्फ़िरतों का सवाब मिलेगा।**

जुमुआ़ को यासीन पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत होगी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शबे जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) यासीन पढ़े उस की **मग़्फ़िरत** हो जाएगी।

(الترغیب والترہیب، 1/298، حدیث:4)

रूहें जम्अ़ होती हैं

जुमुआ़ के दिन **रूहें** जम्अ़ होती हैं लिहाज़ा इस में ज़ियारते क़ुबूर करनी चाहिये और **इस रोज़ जहन्नम** नहीं भड़काया जाता। (در مختار، 3/49) **सरकारे** आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ियारते (क़ुबूर) का अफ़्ज़ल वक़्त रोज़े जुमुआ़ बा'द नमाज़े सुब्ह़ है।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/523)

जुमुआ़ को सूरतुल कह्फ़ पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत होगी

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स जुमुआ़ के रोज़ **सूरतुल कह्फ़** पढ़े उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत को उस के लिये रोशन होगा और दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जाएंगे।" (الترغیب والترہیب، 1/298، حدیث:2)

दोनों जुमुआ़ के दरमियान नूर

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है, हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है : "जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ **सूरतुल कह्फ़** पढ़े उस के लिये दोनों **जुमुओं** के दरमियान **नूर** रोशन होगा।" (سنن الکبریٰ للبیہقی، 3/353، حدیث:5996)

का'बे तक नूर

एक रिवायत में है : "जो **सूरतुल कह्फ़** शबे जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) पढ़े उस के लिये वहां से **का'बे तक नूर** रोशन होगा।" (سنن دارمی، 2/546، حدیث:3407)

सूरए حٰمٓ अद्दुख़ान की फ़ज़ीलत

हम गुनहगारों को अपने रब से जन्नत दिलवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ **सूरतुद्दुख़ान** पढ़े उस के लिये **अल्लाह जन्नत** में एक घर बनाएगा । (معجم کبیر، 8/264، حدیث:8026) एक रिवायत है कि : उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी । (ترمذی، 4/407، حدیث:2898)

सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों का इस्तिग़्फ़ार

अल्लाह पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स रात में **सूरतुद्दुख़ान** पढ़े तो सुब्ह होने तक उस के लिये सत्तर हज़ार (70000) फ़िरिश्ते इस्तिग़्फ़ार करेंगे ।" (ترمذی، 4/406، حدیث:2897)

जुमुआ़ को फ़ज्र से पहले इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नमाज़े फ़ज्र से पहले तीन बार اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ (**तरजमा :** मैं **अल्लाह** पाक से मग़्फ़िरत का सुवाल करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं ।) पढ़े उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों । (معجم اوسط، 5/392، حدیث:7717)

नमाज़े जुमुआ़ के बा'द

अल्लाह करीम पारह 28 **सूरतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۱۰

(پ28، الجمعۃ:10)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब नमाज़ (जुमुआ़) हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** का फ़ज़्ल तलाश करो और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ (या'नी काम्याबी) पाओ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयत के तह़्त **"तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा **1025** पर फ़रमाते हैं : अब (या'नी नमाज़े जुमुआ़ के बा'द) तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श (रोज़ी रोज़गार) के कामों में मश्ग़ूल हो या त़लबे इ़ल्म या इ़यादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़लमा या इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो।

जुमुआ़ के मुस्तह़ब्बात

नमाज़े जुमुआ़ के लिये **अव्वल वक़्त** में जाना, **मिस्वाक** करना, **अच्छे** और **सफ़ेद** कपड़े पहनना, **तेल** और **ख़ुश्बू** लगाना और **पहली सफ़** में बैठना मुस्तह़ब है और **ग़ुस्ल** सुन्नत है। (فتاویٰ ہندیہ، 1/149، غنیہ، ص559)

ग़ुस्ले जुमुआ़ का वक़्त

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि **ग़ुस्ले जुमुआ़** नमाज़ के लिये मस्नून (या'नी सुन्नत) है न कि जुमुआ़ के दिन के लिये। लिहाज़ा जिन पर जुमुआ़ की **नमाज़** नहीं उन के लिये येह **ग़ुस्ल** सुन्नत नहीं। बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि जुमुआ़ का ग़ुस्ल नमाज़े जुमुआ़ से क़रीब करो ह़त्ता कि इस के वुज़ू से जुमुआ़ पढ़ो मगर ह़क़ येह है कि ग़ुस्ले जुमुआ़

का वक़्त तुलूए़ फ़ज्र से शुरूअ़ हो जाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/334) मा'लूम हुवा औ़रत और मुसाफ़िर वग़ैरा जिन पर जुमुआ़ वाजिब नहीं है उन के लिये ग़ुस्ले जुमुआ़ भी सुन्नत नहीं।

जिन पर नमाज़ फ़र्ज़ है मगर किसी शर्ई उ़ज़्र के सबब जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं, उन को जुमुआ़ के रोज़ ज़ोह्र मुआ़फ़ नहीं है वोह तो पढ़नी ही होगी।

ग़ुस्ले जुमुआ़ सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नमाज़े जुमुआ़ के लिये **ग़ुस्ल** करना सुनने ज़वाइद (या'नी सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा) से है इस के तर्क पर इ़ताब (या'नी मलामत) नहीं। (ردالمحتار، 1/339)

ख़ुत्बे में क़रीब रहने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है, हुज़ूरे अक्रम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ाज़िर रहो ख़ुत्बे के वक़्त और इमाम से क़रीब रहो इस लिये कि आदमी जिस क़दर दूर रहेगा उसी क़दर जन्नत में पीछे रहेगा अगर्चे वोह (या'नी मुसल्मान) जन्नत में दाख़िल ज़रूर होगा। (ابوداؤد، 1/410، حدیث:1108) जन्नत में पीछे रहने से मुराद है कि जन्नत में दाख़िल होने या जन्नत के दरजात में पीछे रहेगा।

तो जुमुआ़ का सवाब नहीं मिलेगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** जो जुमुआ़ के दिन कलाम करे जब कि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो उस की मिसाल उस गधे जैसी है जो किताबें उठाए हो और उस वक़्त जो कोई उस से येह कहे कि "चुप रहो" तो उसे (या'नी "चुप रहो" कहने वाले को) जुमुआ़ का सवाब न मिलेगा। (مسند امام احمد، 1/494، حدیث:2033)

चुपचाप ख़ुत्बा सुनना फ़र्ज़ है

जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं मसलन खाना पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब **ख़ुत्बे** की ह़ालत में भी **ह़राम** हैं यहां तक कि अम्र बिल मा'रूफ़ (या'नी नेकी का हुक्म करना भी ह़राम है) हां ख़त़ीब अम्र बिल मा'रूफ़ कर (या'नी नेकी का हुक्म दे) सकता है। जब **ख़ुत्बा** पढ़े, तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना **फ़र्ज़** है, जो लोग इमाम से दूर हों कि **ख़ुत्बे** की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना **वाजिब** है। अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से **ना जाइज़** है। (बहारे शरीअ़त, 1/774, हिस्सा : 4, 39/3، درمختار)

ख़ुत्बा सुनने वाला दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सकता

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो ह़ाज़िरीन दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें, ज़बान से पढ़ने की उस वक़्त इजाज़त नहीं, यूंही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़िक्रे पाक पर उस वक़्त رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/775, हिस्सा : 4, 40/3، درمختار)

ख़ुत्बए निकाह़ सुनना भी वाजिब है

ख़ुत्बए जुमुआ़ के इलावा और ख़ुत्बों का सुनना भी वाजिब है मसलन ख़ुत्बए ईदैन व निकाह़ वग़ैरहुमा। (40/3، درمختار)

पहली अज़ान होते ही कारोबार भी ना जाइज़

पहली अज़ान के होते ही (नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाने की) कोशिश (शुरूअ़ कर देना) वाजिब है और बैअ़ (या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त) वग़ैरा उन चीज़ों का जो सई (या'नी कोशिश) के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़) हों छोड़ देना वाजिब। यहां तक कि रास्ते चलते हुए अगर ख़रीदो फ़रोख़्त की तो येह भी

ना जाइज़ और **मस्जिद** में ख़रीदो फ़रोख़्त तो **सख़्त गुनाह** है और खाना खा रहा था कि अज़ाने जुमुआ की आवाज़ आई अगर येह अन्देशा (या'नी डर) हो कि खाएगा तो जुमुआ फ़ौत हो जाएगा तो खाना छोड़ दे और जुमुआ को जाए। जुमुआ के लिये इत्मीनान व वक़ार के साथ जाए।

(बहारे शरीअत, 1/775, हिस्सा : 4, فتاوٰی ہندیہ، 1/149-درمختار، 3/42)

आज कल इल्मे दीन से दूरी का दौर है, लोग दीगर इबादात की तरह ख़ुत्बा सुनने जैसी अज़ीम इबादत में भी ग़लतियां कर के कई गुनाहों का इरतिकाब करते हैं लिहाज़ा इल्तिजा है कि ढेरों नेकियां कमाने के लिये हर जुमुआ को ख़तीब साहिब क़ब्ल अज़ अज़ाने ख़ुत्बा मिम्बर पर आने से पहले येह ए'लान फ़रमाएं :

"بِسمِ اللہ" के सात के हुरूफ़ की निस्बत से ख़ुत्बे के 7 मदनी फूल

❀ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने जुमुआ के दिन लोगों की गरदनें फलांगीं उस ने जहन्नम की तरफ़ पुल बनाया।" (ترمذی، 2/48، حدیث: 513) इस के एक मा'ना येह हैं कि उस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे। (हाशियए बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, 1/761 ता 762)

❀ **ख़तीब** की तरफ़ मुंह कर के बैठना सुन्नते सहाबा है। लिहाज़ा जो सफ़ों में दाएं बाएं बैठे हैं वोह ख़तीब के मिम्बर की तरफ़ मुड़ जाएं।

❀ **बुज़ुर्गाने** दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : दो ज़ानू (जैसे अत्तहिय्यात में बैठते हैं इस तरह) बैठ कर ख़ुत्बा सुने, पहले ख़ुत्बे में हाथ बांधे, दूसरे में ज़ानू (या'नी रानों) पर हाथ रखे तो اِنْ شَآءَ الله दो रक्अ़त का सवाब मिलेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/338)

www.dawateislami.net

❀ **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ख़ुत्बे** में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक सुन कर दिल में दुरूद पढ़ें कि ज़बान से सुकूत (या'नी ख़ामोशी) फ़र्ज़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 8/365)

❀ "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : **ख़ुत्बे** में खाना पीना, बात करना अगर्चे سُبْحٰنَ الله कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना **ह़राम** है। (درمختار، 3/39)

❀ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ब ह़ालते ख़ुत्बा चलना ह़राम है। यहां तक उ़लमाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि अगर ऐसे वक़्त आया कि ख़ुत्बा शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां तक पहुंचा वहीं रुक जाए, आगे न बढ़े कि येह अ़मल होगा और ह़ाले ख़ुत्बा में कोई अ़मल रवा (या'नी जाइज़) नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 8/333)

❀ **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुत्बे में किसी त़रफ़ गरदन फेर कर देखना (भी) **ह़राम** है। (फ़तावा रज़विय्या, 8/333)

वोह दा'वते इस्लामी में कैसे आए ?

जुमुआ़ के फ़ज़ाइल से ख़ूब नफ़्अ़ उठाने और मन्क़ूल क़ुरआनी सूरतें पढ़ने का जज़्बा पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। आइये ! एक "मदनी बहार" सुनिये और झूमिये : दा'वते इस्लामी में आने से पहले एक नौ जवान इस्लामी भाई बहुत से दूसरे नौ जवानों की त़रह़ मोबाइल फ़ोन के रसिया थे, अपने मोबाइल पर गाने सुनते, फ़िल्में देखते, रात को देर तक दोस्तों के साथ आवारा गर्दी करते, ताख़ीर से सोते तो ताख़ीर से उठते, फ़ज्र और बाक़ी नमाज़ें भी क़ज़ा कर देते। वालिद साह़िब फ़ौत हो चुके थे, मां

के समझाने पर समझते नहीं थे। इन के महल्ले में कुछ दा'वते इस्लामी वाले रहते थे जिन्हों ने इन पर इन्फ़िरादी कोशिश की, कि आप आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में "फ़ैज़ाने मदीना" में ए'तिकाफ़ करें, वहां पर बहुत कुछ सीखने को मिलेगा जिस में नमाज़ का दुरुस्त त़रीक़ा, क़ुरआने पाक सह़ीह़ पढ़ना वग़ैरा शामिल है। यूं येह अपने शह्र के मदनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" के अन्दर ए'तिकाफ़ करने में काम्याब हो गए, और जब ए'तिकाफ़ से वापस आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه गुनाहों से तौबा कर चुके थे, नमाज़ पढ़ने लगे और अपनी वालिदा के फ़रमां बरदार भी बन गए, ज़ैली मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के दीनी काम करने की सआ़दत भी मिली।

भाई गर चाहते हो "नमाज़ें पढ़ूं", दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है "आगे बढ़ूं", दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जिस्म को कमज़ोर करने वाली चीज़ें

अत़िब्बा कहते हैं येह चीज़ें बदन को कमज़ोर कर सकती हैं : **फ़िक्रो ग़म** ज़ियादा करना, नहार मुंह ज़ियादा पानी पीना (कभी कभार थोड़ा सा पानी पी लेना नुक़्सान देह नहीं) और तुर्श (या'नी खट्टी) चीज़ें कसरत से खाना। (احیاء العلوم مع اِتحاف، 5/686 ماخوذاً)

अगले हफ़्ते का रिसाला